विचार बिन्दु

मस्तिष्क इन्द्रियों की अपेक्षा महान है, शुद्ध बुद्धिमत्ता मस्तिष्क से महान है, आत्मा बुद्धि से महान है, और आत्मा से बढकर कुछ भी नहीं है।

–स्वामी शिवानंद

आज विश्व रेडियो दिवस है!

यह दिवस संयुक्त राष्ट्र संघ के एक घटक यूनेस्को की पहल पर मनाया जाता है और यहीं यह भी बता देना उपयुक्त होगा कि संयुक्त राष्ट्र संघ जो अनेक अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाता है, उनमें रेडियो दिवस सर्वाधिक लोकप्रिय दिवसों में से एक है। हर बरस दुनिया भर के असंख्य रेडियो स्टेशन बड़े उत्साह के साथ इस दिन को मनाते हैं और संयुक्त राष्ट्र संघ की इस दिन के निमित्त निर्मित आधिकारिक वेबसाइट को लाखों हिट्स प्राप्त होते हैं। यूनेस्को यह दिन इस भावना से मनाता है कि रेडियो प्रसारकों के बीच अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में वृद्धि हो और विभिन्न नीति निर्माता रेडियो के माध्यम से आम जन तक अधिकाधिक सूचनाएं पहुंचाने के लिए प्रोत्साहित हों। इस दिन अर्थात 13 फरवरी को विश्व रेडियो दिवस मनाये जाने का कारण यह है कि सन 1946 में इसी दिनसंयुक्त राष्ट्र रेडियो प्रारम्भ हुआ था। सन 2011 में यूनेस्को की जनरल कॉन्फ्रेंस ने स्पेन के प्रारम्भिक सुझाव को मानते हुए इस तारीख को विश्व रेडियो दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की और इससे अगले बरस अर्थात 2012 में संयुक्त राष्ट्र संघ की साधारण सभा ने इस दिन को विश्व रेडियो दिवस के रूप में मनाये जाने की आधिकारिक घोषणा की। संयुक्त राष्ट्र संघ हर बरस इस दिन के लिए कोई थीम घोषित करता है। अतीत में लैंगिक समानता, युवा, खेलकूद, विविधता जैसे विषय इस दिन के थीम रहे हैं। इस साल अर्थात 2023 में थीम रखा गया है – रेडियो और शांति।

पिछले कुछ बरसों में हुई अभूतपूर्व तकनीकी प्रगति के कारण भले ही हमारे जीवन में सूचना और मनोरंजन के अनेक नए माध्यम आ गए हैं, यह बात कम चमत्कार पूर्ण नहीं है कि उन सबके बावज़ूद रेडियो अभी भी हमारी ज़िंदगी से विस्थापित नहीं हुआ है। अलबत्ता उसके स्वरूप में, और विषय वस्तु में भी बहुत सारे बदलाव हुए हैं। कभी रेडियो एक बहुत बड़े उपकरण पर सुना जाता था और हर आम व्यक्ति की पहुंच भी उस तक नहीं थी। मोहल्लों में जिन घरों के ऊपर रेडियो का संकेत ठाहण करने वाले तार, जिन्हें एरियल कहा जाता था और जो इण्डोर और आउटडोर दोनों किस्मों के होते थे, लगे होते थे उन घरों को अतिरिक्त सम्मान और ईर्ष्या के साथ देखा जाता था। बुजुर्गों को तो शायद यह बात भी याद होगी, और युवाओं को इसे पढ़कर आश्चर्य भी होगा कि एक समय था जब भारत में रेडियो सुनने के लिए बाकायदा शुल्क देकर लाइसेंस प्राप्त करना होता था और हर बरस उस लाइसेंस का नवीनीकरण करवाना होता था।यह काम डाकघर में जाकर करवाना होता था। आहिस्ता-आहिस्ता बड़े -वाल्व वाले- रेडियो का स्थान छोटे ट्रांज़िस्टरों ने लिया, फिर उनका आकार और छोटा होता गया और आज तो हालत यह है कि सस्ते से सस्ते मोबाइल हैण्डसेट में भी एक रेडियो होता है। इसी के साथ प्रसारण की गुणवत्ता में भी बहुत सुधार हुआ है। पहले जहां विभिन्न किस्म की खड़खड़ाहटों के बीच समाचार या संगीत सुनकर हम स्वयं को कृतार्थ मान लेते थे, आज स्टीरियोफॉनिक ध्वनि भी हमें संतुष्ट नहीं करती है। एफएम रेडियो और उसके डिजिटल रूपान्तरण ने हमारे रेडियो सुनने के अनुभव को आमूल चूल बदल दिया है। एक ज़माना था जब भारत में रेडियो पर फ़िल्मी गाने प्रसारित होने पर बंदिश थी और यही वह ज़माना था जब भारतीय श्रोताओं को रेडियो सीलोन का रुख करते देख कर उन्हें फिर से अपने देश के प्रसारण की तरफ खींचने के लिए विविध भारती की स्थापना की गई थी। आज एफएम चैनल सब कुछ प्रसारित करते हैं – सब कुछ। पहले रेडियो पर सरकार का एकाधिकार था, अब निजी क्षेत्र भी सरकार को कड़ी टक्कर दे रहा है। बहुत कुछ बदला है। अगर नहीं बदला है तो वह है रेडियो का महत्व, और उसकी उपादेयता।

सामान्यत: यह माना जाता है कि विश्व का पहला रेडियो प्रसारण सन 1895 में एक इतालवी युवा मारकोनी ने एक अस्थायी रूप से स्थापित किए गए प्रसारण केंद्र से किया था। असल में तो यह महज़ तकनीकी रूप से ही एक प्रसारण था क्योंकि इसमें मारकोनी ने रेडियो तरंगों के माध्यम से केवल मोर्सकोड को प्रसारित किया था। वैसे तब यह भी इतना बड़ा करिश्मा था कि सन् 1906 में इसके अर्थात वायरलेस टेलीग्राफी के विकास में योगदान के लिए लिए मारकोनी को एक जर्मन वैज्ञानिक फर्डिनंडब्राउन के साथ साझे रूप से भौतिक शास्त्र का नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके बाद अनेक लोगों के अनथक प्रयासों के बाद सन 1905-06 में प्रायोगिक तौर पर वृहत्तर समुदाय के लिए संगीत और वार्ताओं का प्रसारण होने लगा तथा 1920 के बाद से व्यावसायिक रूप से रेडियो प्रसारण होने लगे।

पहली नज़र में यह बात बहुत आश्चर्यजनक लग सकती है कि खूब सारे तकनीकी बदलावों के बावज़ूद रेडियो हमारी ज़िंदगी से न केवल विस्थापित नहीं हुआ है, यह और अधिक मज़बूती से उसका हिस्सा बन गया है। थोड़ा ठहर कर विचार करने पर हम पाते हैं कि इस चमत्कार के मूल में कुछ ख़ास बातें हैं। पहली बात तो यह कि रेडियो बहुत सस्ता और सहज माध्यम है।

शुरुआती दौर में सारे रेडियो प्रसारण लॉन्गवेव, मीडियमवेव और शॉर्टवेव पर होते थे जो बाद में वेरी हाई फ्रीक्वेंसी और अल्ट्रा हाई फ्रीक्वेंसी पर होने लगे। 1920 तक आते-आते रेडियो ने लोगों के जीवन में अपनी जगह बना ली थी और दुनिया भर में संगीत, समाचार, खेलकूद, नाटक आदि का प्रसारण करने वाले करीब 500 केंद्र खुल चुके थे। 1930 तक आते-आते तो अमरीका और यूरोप के हर घर में कम से कम एक रेडियो सेट होने लगा था।

हमारे अपने देश भारत में भले ही आज हम रेडियो को ऑलइण्डिया रेडियो या आकाशवाणी का पर्याय मानते हों, तथ्य यह है कि हमारे देश में प्रसारण की शुरुआत ऑल इण्डिया रेडियो के अस्तित्व में आने से 13 बरस पहले हो चुकी थी। जून 1923 में बॉम्बे के रेडियो क्लब ने पहला प्रसारण किया था और इसके पांच माह बाद कलकत्ता रेडियो क्लब शुरू हो गया था। 23 जुलाई 1927 को द इण्डियन ब्रॉड्कास्टिंग कम्पनी की स्थापना हुई लेकिन बहुत जल्दी यह कम्पनी दिवालिया घोषित हो गई। अप्रेल1930 में उद्योग और श्रम मंत्रालय के अधीन शुरू की गई भारतीय प्रसराण सेवा ने प्रायोगिक आधार पर प्रसारण शुरू किया और इसके एक माह बाद एक निजी रेडियो स्टेशन आकाशवाणी मैसूर की स्थापना हुई। 1937 में सेण्ट्रल न्यूज ऑर्गेनाइज़ेशन की स्थापना हुई और उसी बरस संचार मंत्रालय के अधीन ऑल इण्डिया रेडियो की स्थापना हुई। चार बरस बाद इसे सूचना और प्रसारण मंत्रालय को सौंप दिया गया।

जब देश आज़ाद हुआ, भारत में केवल छह रेडियो स्टेशन थे और इनकी पहुंच देश की मात्र 11 प्रतिशत आबादी और ढाई प्रतिशत क्षेत्र तक थी। भारतीय प्रसारण सेवा को इसका अब प्रचलित नाम आकाशवाणी 1956 में मिला। 1957 में लोकप्रिय फिल्म संगीत प्रसारित करने वाले विविध भारती की शुरुआत हुई। आज भारत का प्रसारण तंत्र दुनिया के सबसे बड़े प्रसारण तंत्रों में गिना जाता है। दो सौ साठ से ज़्यादा केंद्रों वाली आकाशवाणी की पहुंच लगभग पूरे भारत की सारी आबादी तक है। इसके कार्यक्रम 23 भाषाओं और 146 बोलियों में होते हैं। हमारी आकाशवाणी की समाचार सेवा हर रोज़ कुल 56 घण्टों की अवधि के करीब साढ़े छह सौ समाचार बुलेटिन 90 भाषाओं-बोलियों में प्रसारित करती है। कालांतर में आकाशवाणी ने एमएम प्रसारण भी शुरू कर दिये। अब सरकार ने निजी प्रसारकों को भी अपने एफएम रेडियो स्टेशन चलाने की अनुमति दे दी है और उन्हें खूब सुना जाता है। खुद आकाशवाणी भी रेनबो के नाम से अठारह स्टीरियोफॉनिक एफएम स्टेशन चलाती है। निजी क्षेत्र अभी देश के 85 शहरों से करीब ढाई सौ एफएम चैनल चला रहा है और उम्मीद की जाती है कि जल्दी ही यह संख्या बढ़कर करीब तीन सौ शहरों में साढ़े आठ सौ स्टेशन तक जा पहुंचेगी। इनके अलावा बहुत सारे कम्युनिटी रेडियो स्टेशन भी देश में चल रहे हैं। यहीं यह भी बता देना आवश्यक है कि इण्टरनेट के माध्यम से आज हम दुनिया का कोई भी रेडियो स्टेशन आसानी से सुन सकते हैं।

पहली नज़र में यह बात बहुत आश्चर्यजनक लग सकती है कि खूब सारे तकनीकी बदलावों के बावज़ूद रेडियो हमारी ज़िंदगी से न केवल विस्थापित नहीं हुआ है, यह और अधिक मज़बूती से उसका हिस्सा बन गया है। थोड़ा ठहर कर विचार करने पर हम पाते हैं कि इस चमत्कार के मूल में कुछ ख़ास बातें हैं। पहली बात तो यह कि रेडियो बहुत सस्ता और सहज माध्यम है। इसे आप कहीं भी सुन सकते हैं, और सुनते समय यह ज़रूरी नहीं होता कि आप दूसरे काम छोड़कर इसे सुनें। बल्कि प्राय: तो और काम करते हुए ही रेडियो को सुना जाता है। दूसरी बात यह कि इसका लाभ आप बिना कोई खर्चा किए उठा सकते हैं। फिर यह बात भीकि इसके कार्यक्रमों में बहुत अधिक विविधता होती है और विविधता के साथ-साथ स्थानीयता इसकी बहुत बड़ी ताकत है। और अंतिम बात यह कि इसने बदलते वक्त की तकनीक के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में विश्वास किया है।

आज विश्व रेडियो दिवस पर यह कामना करना प्रासंगिक लग रहा है कि यूनेस्को ने इस दिन के लिए जो थीम निर्धारित किया है उसका निर्वहन करते हुए रेडियो इस धरती पर शांति स्थापित करने के अपने प्रयासों में कामयाब हो और हमारी दुनिया को जीने काबिल और खूबसूरत बनाने में अपनी भूमिका अदा करता रहे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

सांखड़ा गांव की पहाड़ियों में पैंथर दिखाई देने से ग्रामीणों में दहशत

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी उपखंड के सांखड़ा गांव की पहाड़ियों में रविवार को एक पैंथर दिखाई देने से ग्रामीणों में दहशत का माहौल बन गया। लेकिन वन विभाग की टीम ने दो घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद पैंथर को ट्रेकुलाईज कर लिया। पैंथर के पिछले पांव में चोट लगी है जिसे इलाज के लिए नाहरगढ बायोलॉजिकल पार्क ले जाया गया है। सांखडा गांव की पहाडियों में पैंथर की सूचना पर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंच कर पैंथर का रेस्क्यू करने में जुटी गई।

- **वन विभाग की टीम ने दो घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद पैंथर को किया ट्रेकुलाइज**
- **पैंथर को इलाज के लिए नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क ले जाया गया**

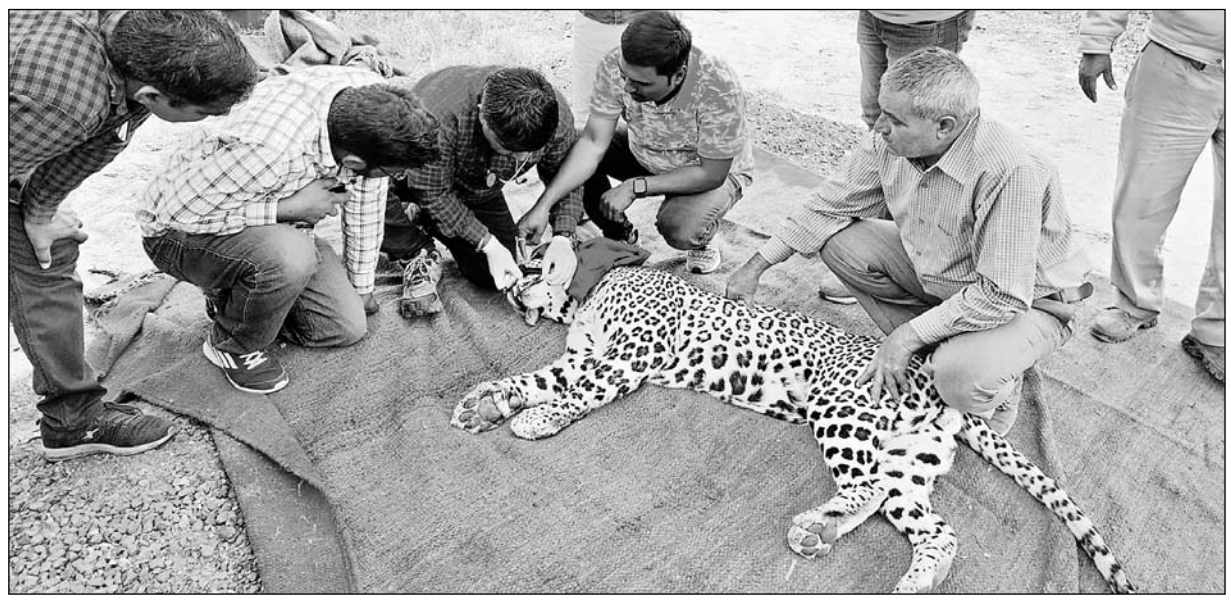

वन विभाग की टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद पैंथर को ट्रेकुलाइज किया, पैंथर के पिछले पांव में चोट लगी है।

वन विभाग के रैंजर विजय कुमार फगेडिया ने बताया कि ग्रामीणों की ओर से सूचना दी गई की सांखडा गांव में एक पैंथर आ गया है, जिसकी सूचना पर सैकडों ग्रामीण एकत्रित हो गए। इस दौरान वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची तथा मौके का निरीक्षण किया गया। उन्होंने बताया कि एक पैंथर गांव के पास अस्थाई नर्सरी व आबादी भूमि से कुछ दूरी पर बैठा हुआ है, जिसका रेस्क्यू के लिए टीम भी मौके पर पहुंच गई है। गांव की पहाडी की स्थिति का जायजा लिया गया। ग्रामीणों के एकत्रित होने के बाद भी पैंथर वहां से नहीं हटने पर पैंथर के बीमार होने का अंदेशा हुआ जिस पर जयपुर जुहू से डॉक्टर अरविंद माथुर के नेतृत्व में डॉक्टर्स की टीम भी मौके पर बुलाई गई।

रेंजर फगेडिया ने बताया कि इस संबंध में उच्च अधिकारियों को भी अवगत करवाया गया है। उन्होंने बताया कि दो घंटे की कडी मशक्कत के बाद डॉ. अरविंद माथुर के नेतृत्व में टीम ने पैंथर को ट्रेकुलाइज कर लिया। फगेडिया ने बताया कि पैंथर के पिछले पांव में चोट लगी हुई है। पैंथर को खेतड़ी रेंज कार्यालय में बने रेस्क्यू सेंटर में ले जाया जा रहा है, प्राथमिक उपचार के बाद सामने आया कि पैंथर के पिछले पांव में चोट लगी हुई है जिसे नाहरगढ बायोलॉजिकल पार्क ले जाया गया है और ईलाज के बाद वापस उसे खेतड़ी अभ्यारण की टेरिटरी में छोड दिया जाएगा। फगेडिया ने बताया कि उन्होंने ग्रामीणों से भी अपील की थी कि वह पैंथर के पास न जाएं क्योंकि जानवर कभी भी अटैक कर सकता है, ग्रामीणों ने भी पैंथर को रेस्क्यू करने में काफी सहयोग किया। जानकारी के अनुसार खेतड़ी बांसियाल रिजर्व कंजर्वेशन में लगातार पैंथर का कुनबा बढ रहा है। बांसियाल कंजेवेशन का कार्य अभी चल रहा है। रिजर्वेशन की चारदीवारी का कार्य पूरा नहीं होने के कारण अक्सर जंगली जानवर आबादी क्षेत्र में घुस आते हैं, जिसकी सूचना पर वन विभाग की टीम उन्हें ट्रेक्युलाइज कर वापस जंगल में ले जाकर छोड देती है। कई बार जंगली जानवर आबादी क्षेत्र में मवेशी व जानवरों का शिकार भी कर चुके हैं।

रेंजर विजय कुमार फगेडिया का कहना है कि बासियाल कंजर्वेशन का कार्य अभी प्रगति पर है, जल्द ही पूरा होने के बाद जंगली जानवर बाहर नहीं आ पाएंगे और यह क्षेत्र लोगों के लिए पर्यटन का क्षेत्र भी बन जाएगा। राज्य सरकार की ओर से जारी किए गए बजट में बांसियाल कंजेवेशन के विस्तार करने की घोषणा की है। पैंथर को ट्रेकुलाइज करने वाली जयपुर टीम के डॉक्टर अरविंद माथुर ने बताया कि जैसे ही उनके पास पैंथर की सूचना मिली वे तुरंत जयपुर से रवाना हो गए और खेतड़ी पहुंच कर उन्होंने हालात का जायजा लिया और एक ही गन शॉट में बिना किसी जनहानि और पैंथर को नुकसान पहुंचाए बिना पैंथर को ट्रेकुलाइज कर लिया।

निर्मल तिवाडी वाइल्ड लाइफ एक्सपर्ट के अनुसार पैंथर के पिछले पांव में चोट लगने की बात सबसे पहले वरिष्ठ पत्रकार वाइल्डलाइफ एक्सपर्ट निर्मल तिवाडी ने फोटो देखकर बताई थी कि यह 10 से 15 वर्ष का मेल पैंथर है और इसके पिछले पांव में चोट लगी हुई है।

गृह कार्य नहीं करने पर शिक्षक ने नौ साल के छात्र को बेरहमी से पीटा

अनूपगढ़, (निसं)। तहसील क्षेत्र के गांव 71 जीबी के एक निजी विद्यालय के एक टीचर को कक्षा 3 के एक छात्र का गृहकार्य कर स्कूल नहीं आना ऐसा नागवार गुजरा कि उसने बालक की बेरहमी से पिटाई कर दी। मामले में अनूपगढ़ पुलिस थाने में बालक के पिता की रिपोर्ट के आधार पर मामला दर्ज किया गया है।

बालक के पिता ने बताया कि जब वह रात को घर आया तो उसके बेटे ने उसके पैर में दर्द होने और अध्यापक की तरफ से मारपीट करने की बात बताई। जब उसने लोकेश के पैर देखे तो उसके पैरों पर डंडे के निशान थे। कमर के नीचे भी डंडों के निशान थे और पैर में सूजन आई हुई थी। जिसकी शिकायत उन्होंने स्कूल के प्रिंसीपल से भी की थी। इस शिकायत को लेकर लोकेश के माता पिता लोकेश को लेकर पुलिस थाना पहुंचे और कानूनी कार्रवाई के लिए परिवाद दिया।

पुलिस थाना के एसआई इमरान खान ने बताया कि बालक के पिता राजेंद्र कुमार उर्फ बीरबल राम निवासी 86 जीबी ने दी गई रिपोर्ट में बताया कि उसका बेटा लोकेश 9 वर्ष का है,जोकि गांव 71 जीबी के केएस पब्लिक सीनीयर सैकेण्डरी स्कूल में कक्षा 3 में पढ़ता है। उसका बेटा 78 जीबी के सरकारी स्कूल में वार्षिकोत्सव में चला गया था। जिस वजह से वह उस दिन स्कूल नहीं जा पाया। दूसरे दिन जब वह स्कूल गया तो वहां के टीचर मुकेश कुमार ने उसके बच्चे को स्कूल नहीं आने और उसका होमवर्क पूरा नहीं होने के कारण उसे डंडे से पीटा। जिसके निशान उसकी पीठ पर है। इतना ही नहीं डंडा टूटने पर उसके बेटे को मुक्कों और थप्पड़ो से पीटा। जिससे उसके बच्चे के पीठ पर आज भी सारे निशान पड़े है। बालक के पिता ने निजी स्कूल के अध्यापक पर कानूनी कार्रवाई करने के आरोप में प्रार्थना पत्र दिया है।अनूपगढ़ पुलिस थाने के कार्यवाहक थानाधिकारी इमरान खान ने बताया कि बच्चे के पिता की रिपोर्ट के आधार पर मामला दर्ज कर लिया गया है।मामले की निष्पक्ष जांच की जा रही है। इस मामले में जो भी व्यक्ति दोषी पाया जाएगा उसके खिलाफ नियमानुसार कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

परीक्षा सम्पन्न

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित वरिष्ठ अध्यापक (संस्कृत शिक्षा विभाग) प्रतियोगी परीक्षा 2022 का आयोजन 12 से 15 फरवरी तक 11 जिलों में किया जा रहा है। परीक्षा के प्रथम दिन ग्रुप-ए एवं ग्रुप-बी की सामान्य ज्ञान एवं शिक्षा मनोविज्ञान प्रश्न पत्र की परीक्षा का आयोजन किया गया। आयोग के संयुक्त सचिव आशुतोष गुप्ता ने बताया कि इस परीक्षा में ग्रुप-ए के 126929 पंजीकृत अभ्यर्थियों में से 59207 अभ्यर्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए। ग्रुप-बी के 128266 पंजीकृत अभ्यर्थियों में से 57974 अभ्यर्थियों द्वारा परीक्षा में भाग लिया गया। इस तरह ग्रुप-ए की परीक्षा में अभ्यर्थियों का उपस्थिति प्रतिशत 45.65 तथा ग्रुप-बी की परीक्षा में 45.20 रहा।

तीर्थ स्थल देवयानी सरोवर की एक साल से नहीं हुई सफाई

सांभरझील, (निसं)। सभी तीर्थों की नानी के नाम से प्रदेश भर में विख्यात देवयानी सरोवर विगत 1 साल से सफाई को तरस रहा है। सरोवर के पानी में गंदगी कीचड़ जमा होने से बदबू मार रहा है। सरोवर पर स्थित कर्मकांड घाट पर एकत्रित हुई पूजा सामग्री, व्यर्थ कपड़े, नारियल सरोवर के जल में व आसपास आसपास पड़े हुए हैं। सरोवर में कमल के सूखे पत्ते गल कर पानी के तल में दलदल के रूप में जमा हो गए हैं। सरोवर के जल में हजारों की तादाद में मछलियां और काफी कछुए हैं जिनके जीवन पर पानी की लगातार हो रही कमी से गहरा संकट खड़ा होने का अंदेशा हो गया है।

पर्यटन और पुरातत्व विभाग दोनों की ओर से यहां पर कराए गए करोड़ों के विकास कार्य के बाद कभी दोबारा यहां पर आकर दृष्टिपात नहीं किया। खास बात यह है कि प्रदेश में विख्यात इस तीर्थ स्थल को लेकर कोई भी डिपार्टमेंट गंभीर नहीं है और ना ही इसके संरक्षण एवं रखरखाव की दिशा में कोई प्रभावी कदम उठाए गए हैं। सरोवर में एकत्रित हुए पानी में जमा गंदगी की वजह से आने वाले प्रतिदिन सैकड़ों श्रद्धालुओं की भावनाएं आहत होती है। यहां के तमाम जनप्रतिनिधि भी अपनी सक्रिय भूमिका अदा करना ही भूल गए हैं जिसकी वजह से पर्यटन नगरी के हालात दिनों दिन और ज्यादा अवनति की ओर बढ़ रहे हैं।

- **गंदगी और कीचड़ जमा होने से बदबू मार रहा है सरोवर का पानी**
- **सरोवर के जल में हजारों की तादाद में मछलियां और काफी कछुए हैं**
- **जीवों के जीवन पर पानी की लगातार हो रही कमी से गहरा संकट का अंदेशा**

सभी तीर्थों की नानी के नाम से प्रदेशभर में विख्यात देवयानी सरोवर में गंदगी फैली हुई है।

सरोवर पर आने वाले श्रद्धालुओं को कुंड में गंदगी फेंकने से रोकने के लिए प्रशासन की ओर से कोई भी इंतजाम नहीं है और न हीं यहां पर आने वाले श्रद्धालुओं को कोई सुविधा मुहैया कराई जाती है। लोगों का कहना है कि सरकार के करोड़ों रुपए के कराए गए विकास कार्य के बावजूद भी देवयानी तीर्थ स्थल का लुक अजमेर के पुष्कर की तरह निखर कर नहीं आ पा रहा है।

जानकारी में आया है कि सांभर में आगामी 17 फरवरी से होने वाले सांभर फेस्टिवल को लेकर जयपुर के बड़े अधिकारी ने यहां की लोकेशन को देखा था और तीर्थ स्थल पर माकूल सफाई व्यवस्था नहीं होने को लेकर नाराजगी जताते हुए संबंधित विभाग को भी लताड़ पिलाई थी। बताया गया कि सरोवर पर नियमित साफ-सफाई को लेकर विभिन्न घाटों पर स्थित मंदिर के पुजारियों की ओर से भी अनुरोध किया गया लेकिन स्थाई समाधान आज तक नहीं निकल रहा है।

पंडित रतन शर्मा से बात करने पर उन्होंने बताया कि देवयानी तीर्थ स्थल के वजूद को यदि बचाना है तो इसके लिए सरकार को ठोस कदम उठाने होंगे पर्यटन और पुरातत्व विभाग की यहां पर शाखा खोलनी होगी। इसके अलावा पालिका प्रशासन की तरफ से स्थाई ड्यूटी के लिए कर्मचारियों को तैनात करना होगा। प्रशासन को चाहिए कि इसके लिए एक अभियान चलाकर मजबूत संसाधनों के साथ सरोवर से पूरी गंदगी और कीचड़ निकाला जाए ताकि तीर्थ स्थल पवित्रता और सुंदरता बनी रह सके।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 13 फरवरी, 2023

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, विशाखा नक्षत्र रात्रि 2:35 तक, वृद्धि योग दिन 2:16 तक, बव करण प्रात: 9:46 तक, चन्द्रमा रात्रि 8:37 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-तुला, मंगल-वृष, बुध-मकर, गुरू-मीन, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज यमघट योग सूर्योदय से रात्रि 2:35 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 2:35 से सूर्योदय तक है। आज फाल्गुन संक्रांति, सूर्य कुम्भ में प्रवेश प्रात: 9:45 पर होगा। पूण्यकाल सांय 4:09 तक है। आज श्री नाथ पाटोत्सव नाथ द्वारा, कालाष्टमी, जानकी जयन्ती है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:32 तक, शुभ 9:55 से 11:18 तक, चर 2:04 से 3:27 तक, लाभ-अमृत 3:27 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:09, सूर्यास्त 6:13

मेष

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी और व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कर्क

घर-परिवार के कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बना रहेगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला

मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक

घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी अनबन-मतभेद बढ़ सकते हैं। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आज अनावश्यक धन खर्च होगा।

धनु

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

कुंभ

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मीन

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आज नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा टालना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।